DSSSB TGT & PGT

Part-B

SCHOLAR BATCH

MODERN HISTORY

Congress

Part -2

LIVE 08-07-2024 04:00 PM

बंग भंग आंदोलन
एवं
स्वदेशी आंदोलन

युवाओं में बढ़ती हुई क्रांतिकारिता
पंजाब व बंगाल में
घटनाएँ बढ़ी।

1. क्रांतिकारी संगठन
2. पत्रपत्रिकाएँ एवं समाचार पत्र
3. वैश्विक घटनाओं
4. सामाजिक धार्मिक सुधार आंदोलन

स्वदेशी एवं बंगभंग आंदोलन

कर्जन

⇒ भारत में फूट डालो और राजकरो नीति का अग्रगामी है।
⇒ भारतीय राष्ट्रवाद को कुचलने का प्रयास करता है।
① ब्रिटिश सर्वोच्चता को भारतीयों के ऊपर थोपा जाये।
② भारतीयों में लोकतांत्रिक मूल्यों को कम किया जाये।
③ ब्रिटिश नियंत्रण को बढ़ाया जाये।

कर्जन द्वारा उठाये गये कदम –

हननकारी

① 1899 – कलकत्ता महानगर पालिका
② 1901 – भारतीय शिक्षा प्रणाली में परिवर्तन एवं हस्तक्षेप हेतु शिमला में सम्मेलन। (भारतीय शिक्षा के उच्चाधिकारियों को बुलाया गया)
③ 1902-03 – रैलेकमीशन
④ 1904 – कलकत्ता विश्वविद्यालय अधिनियम (कलकत्ता विश्वविद्यालय के स्वायत्त स्वरूप में हस्तक्षेप किया गया।
⑤ 1903 – दिल्ली दरबार लगाया जाना (एडवर्ड सप्तम – भारत का सम्राट)
⑥ 1904 – ल्यासा – तिब्बत (यंगहसबैण्ड मिशन)
⑦ 1905 में बंगाल विभाजन किया जाना, जिसके विरोध में भारतीयों के द्वारा बंग-भंग या स्वदेशी आंदोलन चलाया गया।

बंग भंग एवं स्वदेशी आंदोलन

बंगाल विभाजन –

कारण – बंगाल का क्षेत्रफल एवं जनसंख्या अत्यधिक है, जिसे कारण वहां प्रशासनिक असुविधा है।

वास्तविक कारण – भारतीय राष्ट्रवाद को कमजोर किया जाना।

⇒ कर्जन एवं उसके मुख्य सलाहकार बंगाल के ले. गवर्नर एंड्र्यू फ्रेजर तथा भारत सचिव एच. एच. राईसले ने इस विभाजन की आड़ में भारतीय राष्ट्रवाद की आत्मा को कुचलना चाहा।

⇒ ब्लूमफील्ड फुलर ने भी कहा था कि हिन्दू एवं मुसलमान अंग्रेजों की दो प्रिय पत्नियां हैं, उसमें से मुस्लिम सबसे प्रिय पत्नी हैं।

⇒ परन्तु कर्जन इस बात को नहीं समझ सका कि बंगाल के विभाजन से एक ऐसा तूफानी आंदोलन खड़ा हो जाएगा, जो भारतीयों को शांतिपूर्ण और संवैधानिक आंदोलन के तरीकों से बाहर निकालकर आंदोलन के उग्र तरीकों की ओर ले जाएगा।

⇒ 3 दिसम्बर 1903 – बंगाल के विभाजन का प्रस्ताव ब्रिटिश संसद में रखा गया।

⇒ 19 जुलाई 1905 – विभाजन की योजना का प्रस्ताव आम जनता के सामने रखा गया जो कलकत्ता के समाचार पत्रों में 20 जुलाई 1905 को प्रकाशित हुआ।

⇒ ब्रिटिश सरकार के इस निर्णय के प्रति विरोध प्रकट करने के लिये 7 अगस्त 1905 ई॰ को कलकत्ता के टाउन हाल में कासिम बाजार के महाराजा मणीन्द्र नंदी की अध्यक्षता में एक विशाल सभा का आयोजन किया गया। इसी के साथ ही स्वदेशी आंदोलन की औपचारिक शुरूआत हुयी।

⇒ सुरेन्द्रनाथ बनर्जी ने विभाजन की कार्यवाही के विरोध में बंगाल की एकता के प्रतीक के रूप में एक 'फेडरेशन हॉल' के निर्माण का प्रस्ताव रखा, जिसका समर्थन सिस्टर निवेदिता ने किया।

⇒ यहां विदेशी सामान के बहिष्कार का प्रस्ताव भी पारित किया गया।

⇒ 'संजीवनी' पत्रिका के सम्पादक कृष्ण कुमार मित्र 13 जुलाई 1905 में 'बहिष्कार' तथा 'स्वदेशी' का रास्ता अपनाने का सुझाव सबसे पहले लोगों के सामने रखा।

⇒ 16 अक्टूबर 1905 – बंगाल विभाजन की घोषणा लागू।

⇒ बंगाल विभाजन

पूर्वी बंगाल	पश्चिमी बंगाल
राजधानी – ढाका	राजधानी – कलकत्ता
प्रशासक – ब्लूमफील्ड फुलर	प्रशासक – एंड्रयू फ्रेजर
असम	पश्चिम बंगाल
चटगांव	झारखण्ड
ढाका	बंगाल
राजशाही जिला	उड़ीसा

Vijay Sir GS

⇒ 16 अक्टूबर 1905 – आनंदमोहन बोस ने कलकत्ता में 'फेडरेशन हॉल' की नींव रखी। वे बीमार थे, इसलिए उनका भाषण सुरेन्द्रनाथ बनर्जी ने पढ़ा।

⇒ रवीन्द्रनाथ टैगोर ने इस दिन को 'राखी दिवस' के रूप में मनाया।

⇒ रामेंद्रसुंदर त्रिवेदी के अनुसार इस दिन को 'शोक दिवस' के रूप में मनाया गया।

स्वदेशी आंदोलन का प्रसार – पूरे देश में फैला।

पंजाब – लाला लाजपत राय, अजीत सिंह

बम्बई – बाल गंगाधर तिलक, एस॰ एम॰ परांजपे, श्रीमती ए॰ वी॰ जोशी, श्रीमती केतकर (तिलक की पुत्री)

दिल्ली – सैयद हैदर रजा

मद्रास – चिदंबरम पिल्लै

स्वदेशी आंदोलन का प्रभाव –

⇒ स्वदेशी आंदोलन के स्वरूप और उसके प्रसार क्षेत्र को लेकर कांग्रेस के भीतर मतभेद उत्पन्न हो गए और 1907 के सूरत अधिवेशन में कांग्रेस का विभाजन नरमपंथी और गरमपंथी जैसे दो दलों में हुआ।

⇒ 15 अगस्त 1906 – डॉ॰ रास बिहारी घोष की अध्यक्षता में टाउन हॉल में आयोजित एक सभा में 'राष्ट्रीय शिक्षा परिषद' की स्थापना की गयी। (अध्यक्ष – सतीशचंद्र मुखोपाध्याय)

⇒ टैगोर के शांति निकेतन के तर्ज पर 'बंगाल नेशनल कॉलेज' की स्थापना की गई, जिसके प्रथम प्रधानाचार्य अरविंद घोष थे।

⇒ 25 जुलाई 1906 – 'बंगाल टैक्निकल इंस्टीट्यूट' की स्थापना की गयी।

⇒ इस आंदोलन के दौरान ब्रिटिश सरकार के द्वारा आंदोलन में शामिल विद्यार्थियों को हतोत्साहित करने के लिये दो सर्कुलर जारी किये गये।

⇒ कार्लाइल सर्कुलर – 10 अक्टूबर 1905 को बंगाल के कार्यवाहक मुख्य सचिव आर॰ डब्ल्यू॰ कार्लाइल द्वारा हस्ताक्षरित सर्कुलर।

⇒ इस सर्कुलर के द्वारा सभी जिला मजिस्ट्रेटों से यह कहा गया था कि वे अपने क्षेत्र में आने वाले सरकारी स्कूलों व कॉलेजों के प्रधानाचार्यों को ये सख्त हिदायत दें कि उन्हें उन परिस्थितियों में सरकारी सहायता रोक दी जायेगी, यदि वे अपने विद्यार्थियों को आंदोलन में शामिल होने से न रोक सकें।

Divijay Sir GS

⑤ लॉयन सर्कुलर – पूर्वी बंगाल में जारी किया गया जिसके द्वारा ऐसे छात्रों को सरकारी नौकरियों में शामिल करने से प्रतिबंधित किया गया जिसने वन्दे मातरम् के नारे लगाने बंद नहीं किए थे।

⇒ बंगाल में राष्ट्रीय शिक्षा फैलाने में सबसे महत्वपूर्ण भूमिका 1902 में सतीशचन्द्र मुखर्जी द्वारा स्थापित विद्यार्थियों ने किया। (डॉन सोसायटी)

⇒ जगदीशचन्द्र बोस ने इसी आंदोलन के समय 'पौध प्रतिक्रिया' तथा 'तुलनात्मक इलेक्ट्रोसायकोलॉजी' नामक दो सिद्धांत प्रतिपादित किये।

⇒ आचार्य प्रफुल्लचंद्र राय भारत में रासायनिक खोज के प्रथम अन्वेषक थे। उन्होंने स्वदेशी आंदोलन के दौरान अपनी एक उत्कृष्ट रचना 'हिस्ट्री ऑफ हिंदू कैमिस्ट्री' का लेखन किया। 'बंगाल केमिकल फैक्ट्री' की स्थापना की।

⇒ इस आंदोलन का भारतीय उद्योग- धंधों पर भी गहरा प्रभाव पड़ा।

⇒ 1905 –'भारतीय औद्योगिक सम्मेलन' प्रारंभ हुआ। भारतीय उपभोक्ता भारतीय वस्तुओं को प्राथमिकता देने लगे एवं विदेशी वस्तुओं का विशेषतः ब्रिटिश वस्तुओं का बहिष्कार किया जाने लगा।

⇒ इस आंदोलन के समय ही चिदम्बरम पिल्लै ने तूतीकोरिन में 'विदेशी स्टीम नेविगेशन कम्पनी' खोली। इस दौरान पूरे देश में स्वदेशी कल कारखाने, कपड़ा मिलें, माचिस इत्यादि के उद्योग स्थापित हुए। इसके अलावा अनेक बैंक व बीमा कंपनियों की स्थापना हुयी।

⇒ चार बड़े बैंकों की स्थापना की गयी।

① बैंक ऑफ इंडिया (1906)
② बैंक ऑफ बड़ौदा (1908)
③ सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया (1911)
④ बैंक ऑफ मैसूर (1913)

⇒ इस आंदोलन का लोगों के सांस्कृतिक जीवन पर भी गहरा प्रभाव पड़ा।

⇒ ई॰ बी॰ हैवेल इन दिनों 'मद्रास स्कूल ऑफ आर्ट' में अध्यापन का कार्य कर रहे थे। उनका यह मानना था कि भारत की देशी कला विरासत को पुनर्जीवित किया जाना चाहिए, क्योंकि पाश्चात्य कला कभी भी भारतीय लोगों को प्रभावित नहीं कर सकती। इस सोच के साथ वे मद्रास से कलकत्ता आये और यहां 'मॉडर्न स्कूल ऑफ आर्टिस्टस' नामक भारतीय चित्रकारों का अलग निकाय बनाया। इसके सर्वाधिक चर्चित चित्रकार अवीन्द्रनाथ टैगोर थे।

⇒ अवीन्द्रनाथ टैगोर के द्वारा मार्च 1907 में 'भारतीय प्राच्य कला संस्थान' की स्थापना की गयी। (Indian society of Oriental Arts)

⇒ मुख्य उद्देश्य – भारतीय कला पर पड़े पाश्चात्य प्रभाव को तोड़ना।

⇒ अवनींद्रनाथ टैगोर द्वारा बनाए गए चित्रों में 'शाहजहां का ताज में देखना', बुद्ध और सुजाता, 'कमल के पत्ते पर अश्रु कण' इत्यादि काफी प्रसिद्ध है।

⇒ इस संस्था के द्वारा प्रतिभावान छात्रों को प्रतिवर्ष छात्रवृत्ति भी प्रदान की जाती थी और इसकी प्रथम छात्रवृत्ति नंदलाल बोस को मिली थी।

⇒ नंदलाल बोस एक प्रसिद्ध चित्रकार थे, जिसकी श्रेष्ठ कृति है – 'उमा की तपस्या', भगवान बुद्ध घायल बकरी को ले जाते हुए', कृष्ण एवं अर्जुन' आदि।

⇒ बंगला साहित्य का यह एक स्वर्ण काल था। रजनीकांत सेन, मुकुंद दास, रवीन्द्रनाथ टैगोर आदि ने इस आंदोलन के दौरान अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

⇒ रवीन्द्रनाथ टैगोर ने इसी आंदोलन के दौरान 'अमार सोनार बंगला' नामक एक प्रसिद्ध गान की रचना की, जो कि आज बांग्लादेश का राष्ट्रगान है।

⇒ इसी आंदोलन के दौरान तिलक को छह वर्ष की सजा देकर बर्मा के मांडले जेल में भेज दिया गया। उन्होंने कैदी जीवन के रूप में मराठी भाषा के अपने एक प्रसिद्ध ग्रन्थ 'गीता रहस्य' की रचना की थी।

⇒ तिलक ने अपने जीवन काल में दो और प्रसिद्ध ग्रन्थ की रचना की थी – 'दि आर्कटिक होम ऑफ दि वेदाज' तथा 'औरायन'।

स्वदेशी आंदोलन का सामाजिक आधार –

⇒ इस आंदोलन की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि इसने पहली बार भारत की जनता को राजनीति के आधुनिक तौर तरीकों से परिचित कराया।

⇒ इस आंदोलन में पहली बार महिलाओं ने घर से बाहर कदम रखा। उसने विदेशी चूड़ियां पहनने व विदेशी बरतन का इस्तेमाल करने से इंकार कर दिया।

⇒ भारतीय युवाओं के एक बड़े वर्ग ने इस आंदोलन में शिरकत की।

⇒ धोबियों ने भी अपनी भागीदारी को प्रदर्शित करते हुए, विदेशी वस्त्रों को धोने से इंकार कर दिया। कुछ जमींदारों ने भी इस आंदोलन में भाग लिया था।

⇒ इसमें बहुसंख्यक मुसलमानों ने भाग नहीं लिया। इसका बहुत बड़ा कारण इस आंदोलन के दौरान कुछ धार्मिक प्रतीकों को अपनाया जाना था।

⇒ इस आंदोलन की शुरूआत ही गंगा में डुबकी लगाकर की गयी।

⇒ इसी आंदोलन के दौरान पहली बार भवानी की प्रतिमा को स्थान दिया गया।

⇒ शिवाजी महोत्सव जिसे तिलक ने 1895 में प्रारम्भ किया था, को इस आंदोलन के दौरान विशेष महत्व प्रदान किया गया।

⇒ अश्विनी कुमार बनर्जी ने 'सत्यपीर की पूजा' फिर से प्रारम्भ करने और अकबर तथा मीर कासिम के सम्मान में उत्सव मनाने का सुझाव दिया।

⇒ इसमें किसानों की भागीदारी अधिक नहीं रही, इसका एकमात्र अपवाद बारीसाल सम्मेलन था, जिसमें कुछ किसानों ने भाग लिया था। इस सम्मेलन के अध्यक्ष अब्दुल रसूल थे।

स्वदेशी आंदोलन की विशेषता -

⇒ पहला जन आंदोलन था।

⇒ संघर्ष के ऐसे तरीकों का प्रयोग किया गया, जो बाद के राष्ट्रीय आंदोलन का आधार बना। जैसे - हड़ताल, बहिष्कार, राष्ट्रीय शिक्षा इत्यादि।

⇒ इस आंदोलन का दायरा काफी बड़ा था। राजनीति के साथ-साथ, कला, साहित्य, विज्ञान, शिक्षा, उद्योग इत्यादि पर भी इसका प्रभाव पड़ा।

आंदोलन की असफलता के कारण -

1) आंदोलन का एकाएक नेतृत्वहीन हो जाना।

2) निर्ममतापूर्वक दमन किया जाना। कलकत्ता के स्टेट्समैन और लंदन के डेली न्यूज के विशेष संवाददाता नेविंसन ने ब्रिटिश सरकार के द्वारा आंदोलनकारियों पर किए जाने वाले अत्याचारों का आंखों देखा वर्णन किया है।

3) कांग्रेसियों का आपसी मतभेद।

4) प्रभावी संगठन का अभाव।

Thank you.